**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# झारखण्ड आन्दोलन के प्रमुख कारणः एक समीक्षात्मक अध्ययन

**नवनीत कुमार दांगी,** शोधार्थी, इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**नवनीत कुमार दांगी,** शोधार्थी
**E-mail :** dangijee1996@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/10/2024
Revised on : 11/12/2024
Accepted on : 20/12/2024
Overall Similarity : 00% on 12/12/2024

## शोध सार

*झारखण्ड आन्दोलन बहुत ही व्यापक आन्दोलन था। यह कोई आचानक घटने वाली घटना नही थी। इसकी पृष्ठभूमि का निर्माण काफी पहले ही हो चुका था। झारखन्ड क्षेत्र में हुए विभिन्न आदिवासी विद्रोहों में उसकी पृष्ठभूमि को देख सकते हैं। भगवान बिरसा के ''उलगुलान'' अबुवा दिशुम अबुआ राज (हमारा देश हमारा राज) से भी अलग झारखण्ड की अभिव्यक्ति नजर आती है। झारखण्ड आन्दोलन कई कारणों से शुरू हुआ जिसमे भाषा, संस्कृति, खानपान, रहन–सहन, धर्म, जनजातीय समाज की पारम्परिक शासन व्यवस्था, भौगोलिक विविधता, भूमि संबंधी समस्या, जल जंगल जमीन का सवाल, बिहार की उपनिवेशवादी नीति, इत्यादि प्रमुख था। सदियों से झारखण्ड क्षेत्र की अपनी पृथक अभिव्यक्ति रही थी। इसी पहचान को बनाए रखने के उद्देश्य से और उपरोक्त कारणों के कारण झारखण्ड आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। प्रत्यक्ष तौर पर यह आन्दोलन दशकों तक चला और राज्य के निर्माण के बाद ही समाप्त हुआ।*

## मुख्य शब्द

*महाजनी, उपनिवेशवाद, आंदोलन, आंचलिक, झारखण्ड.*

## झारखण्ड आन्दोलन के प्रमुख कारण

झारखन्ड आन्दोलन का स्वरूप बहुत ही व्यापक था। अलग राज्य की माँग के साथ शुरु होने वाला आन्दोलन सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक आन्दोलन था। इस आन्दोलन ने विभिन्न पहलूओं पर पुरे झारखण्डी जनमानस को प्रभावित किया। बिहार राज्य के गठन के बाद झारखण्ड आन्दोलन भी धीरे–धीरे बढ़ने लगी। झारखण्ड आन्दोलन के पीछे कई प्रमुख कारक जिम्मेवार थी जिससे प्रेरित होकर झारखण्ड आन्दोलन प्रारम्भ हुआ

था। इन कारणों को हम निम्न रूप में देख सकते हैं:

(i) **भौगोलिक कारण:** भौगोलिक दृष्टि से झारखण्ड और मूल बिहार एक दूसरे से बिलकुल अलग है। एक पहाडी और पठारी इलाका दूसरा समतल उपजाऊ मैदान। अलग–अलग, भौगोलिक संरचना होने के साथ–साथ दोनों क्षेत्रों की सामाजिक सांस्कृतिक, धर्म, और आर्थिक आवश्यकताएँ भी अलग– अलग रही। मूल बिहार समतल उपजाऊ भूमि होने के कारण अर्थव्यवस्था कृषि आधारित रही है, वहीं दक्षिणी बिहार अब झारखण्ड जंगल, झाड़ पहाड़, और पठारी इलाका होने के कारण अर्थव्यवस्था वन आधारित रही है। शरद चन्द्र राय ने छोटानागपुर पठार का बाकी पुरे बंगाल से फर्क बताते हुए लिखा है– "छोटानागपुर प्रशासकीय दृष्टि से जिस प्रांत का हिस्सा है, अपनी प्राकृतिक बनावट तथा सामाजिक और राजनीतिक इतिहास के लिहाज से यह बिलकुल भिन्न है, यह भिन्नता और भी सजीव हो उठती है। इसके नीले पहाडों और हरे–भरे जंगलों में, पीले धान वाले इसके सीढ़ीनुमा खेतों में, नीचे चट्टानों और ढाल की ओर दौड़ते पहाडी नदी–नाला मनमोहक पहाडी, चट्टानों में यह सब बंगाल के उन समतल मैदानों से बहुत अलग है, जहाँ बड़ी वेगवती नदियाँ अपने साथ मिट्टी को बहाती हुई समुद्र में मिल जाती है। जिस तरह बाकी प्रांत के साथ छोटानागपुर पठार का प्राकृतिक स्वरूप बिलकुल भिन्न है उसी तरह उत्तर और दक्षिण बिहार में बसने वाले लोगों, भाषाओं, तौर–तरीकों और सामाजिक रीति–रिवाजों और राजतिक इतिहास मे भी बहुत भिन्नता है साथ ही भूमि व्यवस्था मे भी बहुत फर्क है।[1]

इस प्रकार स्पष्ट है की दोनों क्षेत्रों की भौगोलिक विशेषताओं मे काफी अंतर है। झारखण्ड आन्दोलन के सबसे प्रमुख कारणों में भौगोलिक कारण को रख सकते हैं। यह सबसे ज्यादा ज़िम्मेवार थी अलग झारखण्ड के लिए दिए गए सभी मेमोरेंडम में भौगोलिकता को प्रमुख स्थान दिया गया था। वर्तमान समय में भी बिहार और झारखण्ड की भौगोलिक संरचना को देखा जा सकता है।

(ii) **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:** ऐतिहासिक रूप से भी झारखण्ड का क्षेत्र भारत के अन्य क्षेत्रों से पृथक रहा है। प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र की अपनी अलग पहचान रही है। सदियों से यह क्षेत्र स्वायत्त था। ऐतिहासिक दस्तावेजों में भी यह प्रमाण उपलब्ध है कि अंग्रेजी शासन के पूर्व किसी सम्राट, सुल्तान या शहंशाह के साम्राज्य में होते हुए भी उनके सीधे नियंत्रण में न होने के कारण हर हाल मे झारखण्ड लगभग स्वतंत्र ही था।[2] जो भी शासक इस क्षेत्र में आए कुछ पेशकश अथवा नजराना लेकर वापस चले गए। अंग्रेजों के आगमन के बाद ही इस क्षेत्र की स्वतंत्रता प्रत्यक्ष तौर पर आहत हुई। 1769 ई. से लेकर 1915 ई. तक किसी न किसी कारण से लगातार विद्रोह चलता रहा। जनता अपने स्वायत्तता के लिए संघर्ष करती रही।

**छोटानागपुर:** संताल परगना 1912 ई. के पहले कभी भी बिहार–उड़ीसा का हिस्सा नहीं था। अंग्रेजों ने सबसे पहले झारखण्ड का नाम बदलकर बंगाल एक्ट 1833 के तहत बिहार, बंगाल, उड़ीसा तथा मध्यप्रदेश के जनजाति क्षेत्र को मिलाकर 'साउथ वेस्ट फ्रंटियर ऐजेंसी' के नाम से अलग प्रांत का निर्माण 15 जनवरी, 1834 ई. को किया गया था, जिसकी राजधानी लोहरदगा थी। बीस वर्ष बाद 1854 ई. में इसी का नाम छोटानागपुर रखा गया था।[3] इस प्रकार ऐतिहासिक रूप से भी झारखण्ड लगभग स्वतंत्र था और इसी स्वायत्तता ने झारखण्ड राज्य निर्माण के लिये प्रेरित किया।

(iii) **भूमि संबंधी समस्या:** 1793 ई. का स्थायी बन्दोबस्त और 1859 ई. का बिक्री और लगान कानून लागू होने के बाद विशेषकर छोटानागपुर पहाड़ी क्षेत्र के आदिवासियों की भूमि बाहरी लोगों के हाथों मे स्थानांतरित कर दिया गया।[4] इस कानून से राजस्व वसूली का अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी को प्राप्त हो गया तथा भूमि का मालिकाना हक जमींदारों को दे दिया गया। लगान न देने पर जमींदार कृषक को भूमि से वंचित कर सकता था। वहीं आदिवासी प्राचीन काल से ही भूमि पर अपना अधिकार मानते थे। उनका मानना था कि उन्होंने भूमि को कृषि योग्य बनाया है तो उस पर किसी और को कर लगाने का कोई अधिकार नहीं है। इस प्रकार स्थायी बन्दोबस्ती से जो थोड़ी बहुत जमीन आदिवासियों के पास थी, साहूकारों, नए जमींदारों और गैर–आदिवासियों के अधिकार में जाने लगी। जमींदार भूईहरी खेतों पर दखल करते गए। मालगुजारी भी बढ़ती

गयी उससे बेगारी प्रथा भी अपने चरम पर पहुँच गयी। बाद में भुईहरी तथा खुट्टकटी खेतों मे मालगुजारी नही बढ़ाने का कानून बना पर कोई समाधान नही हो सका। इससे धीरे–धीरे आदिवासियों में असंतोष की भावना बढ़ने लगी।[5] 1908 ई० में छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम लागू होने के बाद भी भूमि संबंधी समस्या में कोई विशेष सुधार नही हुआ। बाद में महाजनी आन्दोलन और धनकटनी आन्दोलन उसी का परिणाम था।

(iv) **असमान विकासः** झारखन्ड आन्दोलन को गति प्रदान करने में सबसे महत्वपूर्ण कारक असमान विकास था। सम्पूर्ण बिहार के राजस्व में झारखण्ड क्षेत्र से 70 प्रतिशत का आय होता था लेकिन सम्पूर्ण आय का 20 प्रतिशत हिस्सा ही छोटानागपुर–संथाल परगना के इलाके में खर्च किया जाता था। बाकी हिस्सा बिहार के अन्य क्षत्रों में खर्च किया जाता था। इसी प्रकार बिहार प्रदेश के कुल बिजली उत्पादन में झारखण्ड क्षेत्र में ही 90 प्रतिशत उत्पादन होता था लेकिन झारखण्ड क्षेत्र में 5 प्रतिशत क्षेत्र ही विद्युतीकृत हो पाया था। इसी प्रकार प्रति 1000 कि.मी. सड़क पर केवल 5 कि.मी. सडक झारखण्ड क्षेत्र में था।[6] इस प्रकार से असमान विकास एक प्रकार से झारखण्ड क्षेत्र बिहार का उपनिवेश बन गया था। बिहार की उपनिवेशवादी नीति के कारण वर्ष 1981 तक इस क्षेत्र में आदिवासियों की संख्या घटकर 28 प्रतिशत तथा सदानों की संख्या 57 प्रतिशत हो गयी थी। दूसरी तरफ 1937 ई. के बाद आये बिहारियों की संख्या 15 प्रतिशत हो गयी और इन्ही का सर्वत्र आधिपत्य स्थापित हो गया। लगभग 85 प्रतिशत सरकारी नौकरियों, शैक्षणिक संस्थानों, निजी प्रतिष्ठानों पर इन्ही 15 प्रतिशत बिहारियों का कब्जा हो गया।[7]

प्रसिद्ध मार्क्सवादी विचारक और धनबाद के पूर्व सासंसद रहे ए.कै. राय भी अपनी लेख 'असमान विकास' में लिखते हैं कि – "भारत के विभिन्न अंचलों के बीच असमान विकास क्षेत्रीयता का जनक है। आय का असमान बंटवारा लोगों के मन में अंसतोष का भाव उत्पन्न करता है।[8] वस्तुतः झारखण्ड आन्दोलन को आर्थिक समस्याओं का राजनीतिक विस्फोट कहा जाना चाहिए।[9]

(v) **जल, जंगल और जमीन का प्रश्नः** झारखण्ड आन्दोलन वस्तुतः जल, जंगल और जमीन की रक्षा के सवाल को लेकर भी उत्पन्न हुआ था। प्राचीन काल से ही जंगल झारखण्ड की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग रहा है। परन्तु धीरे–धीरे जंगल की लकडियों, पशु–पक्षी, फल–फूल, कंद–मूल इत्यादि सभी प्रकार की वन उत्पाद और वन सम्पति पर बाहरी दिकूओं का अधिकार बढ़ता गया। वनों पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिए गए। झुम पद्धति से आबाद की गयी भूमि छिनने लगी। जमीन आदिवासियों के हाथों से जा रही थी। आज आदमी को लकड़ी काटने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। दूसरी तरफ ठेकेदारों के द्वारा अंधाधुंध जंगलों की कटाई की जा रही थी। उस प्रकार आदिवासियों का जीवन कठिन हो गया। औद्योगिकीकरण के बाद झारखण्ड क्षेत्र में प्रदुषण भी एक प्रमुख समस्या बन गयी। नदियों, झरनों का पानी बहुत ही दूषित हो गया। वह पीने लायक नही रहा। कई आदिवासी समूह सीधे पीने और अन्य काम के लिए पानी नदियों से प्राप्त करते थे। उनके स्वास्थ पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। उस प्रकार झारखण्ड आन्दोलन में जल–जंगल और जमीन का प्रश्न एक प्रमुख मुद्दा था।

(vi) **राजनीतिक चेतना का प्रसारः** ईसाई धर्म प्रचारकों के आगमन के बाद धीरे–धीरे इस क्षेत्र के आदिवासियों में शिक्ष तथा आधुनिकता की भावना का विकास हुआ। आदिवासियों को अपने–अपने अधिकारों के प्रति जागरुक करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसका परिणाम यह हुआ कि आदिवासी भी आने वाले वर्षो में सरकार की नीतियों का मूल्यांकन करन लगे। जियाउद्दीन अहमद भी इस विषय में अपनी किताब' 'बिहार के आदिवासी' मे लिखते है–"जनजातीय मध्य भारत का यह भाग राजनीतिक चेतना और आर्थिक विकास की दृष्टि से काफी आगे बढ़ा हुआ था। ईसाई प्रचारकों ने इस क्षेत्र में शिक्षा तथा आधुनिकता की भावना को विकसित किया था। उसके साथ–साथ जनजातीयों के विभिन्न संघर्ष से भी पृथक राज्य निर्माण की प्रेरणा को बल मिला।[10]

(vii) **राजनीतिक कारणः** झारखण्ड आन्दोलन के लिए राजनीतिक कारण भी उत्तरदायी थी। राजनीतिक भेदभाव ने नए राज्य के आन्दोलन के लिए प्रेरित किया। छोटानागपुर–संथाल परगना के क्षेत्र के लोगो का बिहार की राजनीति में भागीदारी न के बराबर थी। जब भी बिहार में प्रांतीय सरकार का गठन किया गया सरकार

में झारखण्ड क्षेत्र के किसी भी प्रतिनिधि को मंत्रीमंडल में स्थान नही दिया गया। इससे धीरे–धीरे उस क्षेत्र के लोगो के मन में असंतोष का भाव पनपने लगा। लोग अपने हितों और अधिकारों के संरक्षण हेतु अपनी राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित उसे हेतु आन्दोलन के लिए प्रेरित हुए।

(viii) **स्थानीय शासन व्यवस्था पर सरकार का बढ़ता हस्तक्षेपः** झारखण्ड में स्थानीय शासन की परम्परा प्राचीन काल से ही मौजूद था। ये आदिवासी कबीला कई हिस्सों में बंटा था और उन लोगो की अपनी निष्ठा, विश्वास अपने संबंधित सरदार (मुखिया) को छोडकर किसी में नही था।[11] लेकिन अंग्रेजों के आगमन के बाद ही इनकी स्थानीय शासन व्यवस्था पर प्रारम्भ हो गया। आदिवासी अपनी व्यवस्था में हस्तक्षेप को देखते हुए अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष छेड़ दिया। अंत में अंग्रेजी सरकार ने आदिवासियो की माँगो को मानते हुए सिंहभूम तथा कोल्हान के क्षेत्र में 'विलिकिन्सन कानून' पारित किया गया जो अंग्रेजो के भारत में जाने के बाद भी लागू रही। इस कानून के अनुसार इस क्षेत्र की पारम्परिक 'मानकी मुण्डा परहा' व्यवस्था को मान्यता प्रदान को गयी थी। बाद में इसे बिहार सरकार ने भी मान्यता प्रदान की थी, लेकिन बाद में बिहार पंचायती राज अधिनियम 1948 के द्वारा अतिक्रमण प्रारम्भ हो गया। यह एक प्रकार से स्थानीय शासन में द्वैध शासन व्यवस्था की स्थापना हो गयी। एक ओर पारम्परिक शासन व्यवस्था वही दूसरी तरफ सरकार के द्वारा पंचायती व्यवस्था के तहत शासन। इस प्रकार आपस में संघर्ष की स्थिति बनने लगी।

## निष्कर्ष

झारखण्ड आन्दोलन के पीछे कई प्रमुख कारकों का योगदान रहा जिससे झारखण्ड आन्दोलन को प्रेरणा मिली। झारखण्ड आन्दोलन की नींव काफी पुरानी जान पडती है। झारखण्ड क्षेत्र में जितने भी आदिवासी विद्रोह हुए उन सब से जल, जंगल तथा जमीन का प्रश्न, भूमि संबंधी समस्या, महाजनों, सूदखोरों के प्रति रोष, पारम्परिक शासन व्यवस्था में बाहरी हस्तक्षेप इत्यादि प्रमुख कारण था और लगभग यही समान कारण झारखण्ड आन्दोलन के लिए उत्तरदायी रहे। इस प्रकार झारखण्ड आन्दोलन की पृष्ठभूमि का निर्माण बहुत ही पहले हो चुका था। प्रत्यक्ष तौर पर झारखण्ड आन्दोलन की शुरूआत बिहार राज्य के गठन के साथ ही हो गया था और एक लम्बे संघर्ष के बाद 15 नवम्बर 2000 ई. को भगवान बिरसा के जन्म दिवस पर 28वें राज्य के रूप मे झारखण्ड राज निर्माण के साथ झारखण्ड आन्दोलन का समापन हुआ। हालांकि जिस झारखण्ड का निर्माण मध्य प्रदेश, उडिशा, बिहार और बंगाल के आदिवासी बहुल क्षेत्रों को मिलाकर करने की मांग की गयी थी उसे पुरा नही किया केवल बिहार के दक्षिणी हिस्से को अलग करते हुए झारखण्ड राज्य का गठन किया गया।

## संदर्भ सूची

1. तलवार, वीर भारत (2017) *झारखण्ड आन्दोलन का दस्तावेज,* नवारुण, गाजियाबाद, पृ. 30।
2. महतो, शैलेन्द्र (2015) *झारखण्ड की समरगाथा,* दानिश बुक्स, दिल्ली पृ. 39।
3. वही, पृ. 39।
4. मुण्डा, रामदयाल (1988) *झारखण्ड मुक्सेंट,* ए हिस्टोरिकल प्रोसपेक्टिव द सोशल चेंज, पृ. 84।
5. विरोत्तम, बी (2017) *झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति,* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ. 382।
6. वही, पृ. 382।
7. वही पृ. 38।
8. कश्यप, अभिषेक (2021) *कामरेड ए. के. राय,* समग्र, इंडिया टेलिंग, धनबाद, पृ. 342।
9. प्रसाद, नवीन चंद्र (1987) *छोटानागपुर में अलगाववादी आन्दोलन,* गुमला, पृ. 3।
10. अहमद जियाउद्दीन (1978) *बिहार के आदिवासी,* मोतीलाल बनारसीदास, पटना, पृ. 174।
11. महतो, शैलेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 39।

********